आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ -------- Date:22-11-14

हम आत्माओं को ज्ञान और योग की दवा देकर निर्विकारी-निरोगी बनाने वाले बेहद के सर्जन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - अपनी खामियां निकालनी हैं तो सच्चे दिल से बाप को सुनाओ, बाबा तुम्हें कमियों को निकालने की युक्ति बतायेंगे.

इस ईश्वरीय ज्ञान ने हमें इतना तो जरूर सिखलाया है कि अगर मुझे किसी भी बात में दुख होता है तो मेरे में कोई ना कोई विकार जरूर हैं. यही हमारे लिए सिगनल है अपने में चेक करने का. इस ज्ञान ने हमें तीन मुख्य राज (Razz) बताये है - आत्मा का, परमात्मा का और सारी सृष्टि चक्र का. सारे कल्प में किसी भी जन्म में किसी को भी यह ज्ञान नहीं मिलता. यह ज्ञान हमें सब बातों से मुक्त कर देता हैं. आज भी सारे संसार में कुछ गिनी-चुनी आत्माओं को ही यह ईश्वरीय ज्ञान मिला है और उसमें से भी बहुत थोड़ी आत्माये होगी जिसने इसको पुरी तरह से समझा और अपने में धारण किया हैं. कभी यह सोचता हूँ तो अपने को कितना भाग्यशाली महसूस करता हूँ कि सारे संसार में बड़े ज्ञानी कहे जाने वाले वैज्ञानिक, ड़ोक्टर्स और इंजीनियर्स को भी मालूम नहीं है जो हमें बाबा ने कितने सहज रुप से समझाया हैं. यह बात ही हमारे में खुशी भर देती है कि हमें कौन मिला है और उनसे हमें क्या मिला है.

आज सत स्वरूप बाप ने बच्चों को कहा कि अपने में जो भी खामियां है वह बाप को जरूर बतावो. बाप को बतायेंगे तो ऐसा नहीं कि बाबा "तथास्तु करके" हमारी खामी मिटा देंगे. नहीं, लेकिन बाबा हमारी खामी को दूर करने की युक्ति जरूर बतायेंगे. यही बात क्लियर करती है कि अब हम ज्ञान में है, भक्ति में नहीं. यह एक स्कूल है जहॉ हमारी आत्मा को विकारों से मुक्त कर, निर्विकारी दैवी-देवता बनने का ज्ञान दिया जाता हैं और यह ज्ञान देने वाला भी नयी सतयुगी सृष्टि के रचयिता, ज्ञान-सागर, बेहद का बाप हैं. इतना सब जानते भी अगर हम अपनी खामियों को बाप से छिपाते है तो हम अपने को ही नुकसान करते हैं.

बाबा कहते है अगर लक्ष्मी को वरना है तो अपनी शक्ल आईने में देखो. कैसे देखेंगे? अंतर्मुखी अवस्था से. इसके लिए एकान्त में फुरसत से बैठना हैं.

एकाग्रता कि शक्ति को उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो को उपयोग कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फील करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये. ध्यान में रहे कि इस स्वमानो को उपयोग करने से पहले, हमें अपने संकल्पों को मर्ज कर देना हैं.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूं. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ. में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

यही पुरुषार्थ हमारे संकल्पों को भी कम कर देगा, जिसे बाप से योग अच्छा होगा. बाबा से योग में ही बाप की कही बातों को इस तरह से याद करेंगे तो हम अपनी खामियों को चेक करने में और उसे बाप को बताने में भी सफल होंगे. यह याद रहे कि बाबा हमें नहीं बतायेंगे कि हमारे में क्या-क्या खामियां है. हमारी खामी ओ को हमें ही ढूँढ कर बाप को बतानी है. यही पुरुषार्थ हैं देवी-देवता बनने का.

- बाबा कहते है बच्चे क्या समझते हो? लक्ष्मी को वरने लायक बने हो? अगर नहीं तो क्या-क्या खामियां हैं? जिन को निकालने के लिए तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो. तुम्हें लक्ष्मी-नारायण जैसा परफैक्ट बनना है. बाप आते ही है तुम्हें परफैक्ट बनाने.

- बाबा कहते है तो अपने से पुछो - हमारे में क्या-क्या खामियां हैं, जिन को निकाल हम अपनी उन्नति करें? और ईमानदार होकर बाप को बतावे कि बाबा यह खामी है, जो हमसे अभी निकलती नहीं है, कोई उपाय बताओ.

- बाबा कहते है - बीमारी सर्जन द्वारा ही छूट सकती है. तो ईमानदारी से अपनी जांच करो - मेरे में क्या-क्या खामियां है? जिस कारण मैं समझता हूँ कि अगर मेरा शरीर अभी छूट जाये तो यह पद नहीं पा सकूंगा.

ऐसे पुरुषार्थ कर हमारी एक-एक खामी को निकालनी ही हैं. अगर हम अपनी सब खामियां निकाल देंगे तो हमें सदा के लिए खुशी रहेंगी. अन्त में सम्पूर्ण होकर यह शरीर को त्याग करेंगे और विजयी आत्मा बनेंगे. ॐ शांति.